सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन

(पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में, सन् 2012 से 2022 तक)

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ
की
पी.एच.डी (पत्रकारिता एवं जनसंचार)
उपाधि
हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध

शोध निर्देशक
डॉ. नरेन्द्र कुमार मिश्र
प्रोफेसर
स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एंड टेलीविजन स्टडीज
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ

शोधार्थीः
सूरज देव प्रसाद
नामांकन संख्या- IIMTU/ 2199004
suriddhim@gmail.com

शोध केन्द्र
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय
गंगा नगर कॉलोनी, मवाना रोड, मेरठ (उ.प्र.)
2023

शोध समस्या

तीव्र सूचना के युग में जब टेलीविजन और इंटरनेट युक्त मोबाइल फोन के साथ सोशल मीडिया के विविध मंच का प्रभाव चरम पर है, ऐसे में 'सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में, सन् 2012 से 2022 तक)' समीचीन है। प्रश्न उठता है कि ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में ही क्यों? ऐसा इसलिये क्योंकि समय रहते उन प्रवृतियों को रेखांकित किया जाना अतिआवश्यक है जो ग्रामीण जीवन के संतुलित विकास के लिये महत्वपूर्ण हैं। इससे अधिक नकारात्मक प्रवृतियों को लेकर सचेत होना भी आवश्यक है। सोशल

मीडिया के कारण ग्रामीण समाज के ताने-बाने में जिस प्रकार परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं, संभव है कि यह ग्रामीण विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभाए अथवा ग्रामीण संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने का कारक बने। दोनों ही स्थितियों की पहचान करना आवश्यक है।

ग्रामीण जीवन

आज भी भारत की बहुसंख्यक जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। अतः भारत के समग्र, संतुलित और सर्वांगिण विकास के लिये गाँवों को विकसित करना अपेक्षित है। वर्तमान में संचार के विविध माध्यमों में सोशल मीडिया ग्रामीण जीवन को सर्वाधिक प्रभावित कर रहा है। वह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों है। समाज के ताने-बाने से सामाजिक जीवन का निर्धारण होता है। बदलते युग के साथ इन नियमों में परिवर्तन होता रहा है और इससे ग्रामीण जीवन भी बदल रहा है। उदाहरण के लिये रेडियो और टेलीविजन के प्रभाव से ग्रामीण जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। सोशल मीडिया की दस्तक ने ग्रामीण जीवन में कई परिवर्तन किए, यानि एक तरफ सोशल मीडिया लोगों के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है तो दूसरी ओर प्राचीन संस्कृति और परंपराओं की चूलें हिला दीं। जब गाँव में सोशल मीडिया नहीं पहुंचा था और सभी घरों में टेलीविजन अथवा रेडियो भी नहीं थे, तब अशिक्षा के कारण समाचार-पत्र व अन्य दूसरे संचार माध्यमों का प्रभाव ग्रामीण समाज पर अत्यधिक दिखाई नहीं देता। तब ओपिनियन लीडर की महती भूमिका थी, लेकिन रेडियो और बाद में टेलीविजन के साथ सोशल मीडिया ने उस निर्भरता को समाप्त कर दिया। लगभग प्रत्येक युवा के हाथ में फोन आने से वह बाहरी दुनिया की सूचनाओं को घर के सदस्यों के साथ साझा कर सकता है।

सोशल मीडिया ग्रामीण विकास संचार का एक सशक्त औजार है। इससे नवाचार के प्रसारण से ग्रामीण जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। सोशल मीडिया के कारण बदलते ग्रामीण जीवन के विविध आयामों, विशेषताओं, प्रभावों की बारीकी से पहचान होनी चाहिए और सामाजिक जीवन और व्यवहार को रेखांकित किया जाना चाहिए। इस परिवर्तन के संदर्भ में ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन अपेक्षित है।

शोध शीर्षक

‘सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन’
(पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में, सन् 2012 से 2022 तक)

प्रस्तावना

गाँव कहते ही मस्तिष्क में जो बिंब बनता है, उसमें सादगी, सहजता से संपृक्त प्रकृति के सहचरी, कृषि और पशुपालन कार्य करने वालों की छवि उभरती है। ग्रामीण जीवन की जटिलता के बाद भी सरलता, आत्मनिर्भरता, आपसी सहयोग ग्रामीण जन की प्रमुख विशेषता रही है और परंपरा से यही जन सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना के वाहक और प्रहरी रहे हैं। भारतीय ग्राम की विशिष्ट संरचना है और आत्मा इसकी पारंपरिक मूल्य और आचरण हैं। जब कभी समाज के ताने-बाने की बात होती है तो प्रश्न उठता है कि ये ताने और बाने क्या हैं? वास्तव में परंपरा से चले आ रहे सामाजिक नियम इसके ताने हैं और उन नियमों पर समाज के आचरण ही बाने हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक रीति-रिवाज पर आधारित ग्रामिणों के आचरण एवं कार्य ही ग्रामीण जीवन के समाजशास्त्रीय अध्ययन के विषय हैं। इन रीति-रिवाजों का आधार धर्म, परंपराएं और विविध संस्कृतियां हैं।

कोस-कोस पर पानी बदले, दो कोस पर वाणी। इस कहावत से सिद्ध होता है कि प्रत्येक गाँव समूह सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चेतना आदि में एक-दूसरे समूहों से भिन्न रहे हैं। समय के साथ भिन्न ग्रामीण संस्कृतियों के आपसी संसर्ग से गाँव बदलते रहे हैं। राजनीतिक स्थिरता की स्थिति में बदलाव की गति धीमी रही

तो राजनैतिक और सांस्कृतिक आक्रमण की स्थिति में तीव्र। प्राचीन काल में गाँवों में संचार के परंपरागत साधनों जैसे तीज-त्योहार, विभिन्न संस्कार में मेल-मिलाप, लोकगीत, लोक-नाट्य, मेला-उत्सव आदि में कठपुतली नृत्य, लोकनृत्य आदि की गति बेशक धीमी रही हो किन्तु यह परंपरा, संस्कृति, सामाजिक रीति-रिवाज और दूसरे सामाजिक ताने-बाने के सशक्त वाहक थे। आधुनिक संचार साधनों के विकास के साथ गाँवों के बदलने की गति भी तीव्र हुई। हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार का संचार माध्यम रहा, वैसा ही उसका प्रभाव दिखाई दिया। समाचार-पत्र, पत्रिका के साथ रेडियो और टेलीविजन के कारण इसकी गति तीव्र हो गई। गाँवों पर रेडियो के प्रभाव से हम सभी विदित हैं तो दूरदर्शन इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सफल रहा। गुजरात का खेड़ा संचार परियोजना के निष्कर्ष इसके जीवंत साक्ष्य हैं।

आज समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टेलीविजन आदि जनसंचार माध्यमों की तुलना में सोशल मीडिया ग्रामीण समाज में अधिकाधिक लोकप्रिय हो रहा है। समाचार सुनना-देखना, गाना सुनना, फिल्म देखना आदि सब कुछ सोशल मीडिया पर संभव हो गया है। इसने दूर के रिश्तों को बांध कर जीवंतता प्रदान की है, तो दूसरी ओर समीप के रिश्तों को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी किया है। आज सोशल मीडिया लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है जिसे अब अलग करना संभव नहीं दिखता। तकनीक ने सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को सशक्त, आत्मनिर्भर और बौद्धिक रूप से ज्ञानवान बनाया है। सोशल मीडिया से जहां कतिपय सामाजिक नियम एवं मूल्य छिन्न-भिन्न होते दिख रहे हैं, वहीं इससे प्राचीन भारतीय संस्कृति की पहचान सुदृढ हो रही है। लोग अपनी जड़ों से जुड़ते दिखाई दे रहे हैं। संचार विकास ने भी इस बात की पुष्टि की है कि संस्कृति की उपेक्षा कर किया गया विकास बेमानी है। तमाम धार्मिक और ऐतिहासिक धारावाहिक और चलचित्र इसके जीवंत उदाहरण हैं। कुल मिलाकर ग्रामीण जीवन में सोशल मीडिया की उपस्थिति एक अनिवार्य सत्य के रूप में परिलक्षित हो रही है और इसने बहुत हद तक ग्रामीण जीवन को पुनर्स्थापित और पुनर्परिभाषित किया है। इससे नये सामाजिक प्रतिमानों का उदय हो रहा है जो वैश्विक स्तर पर सार्वभौमिक प्रतीत होते हैं। अतः सोशल मीडिया की अनिवार्य उपस्थिति के फलस्वरूप जन्म ले रहे नये सामाजिक मूल्यों, प्रतिमानों का आकलन एवं विश्लेषण करना अति आवश्यक है।

आज पूरी दुनिया बदल रही है। सोशल मीडिया जैसे संचार माध्यम इस बदलाव के प्रमुख कारक हैं। इससे गाँव भी अछूता नहीं है। यब बदलाव सकारात्मक भी है जो हमारी संस्कृति, सामाजिक संरचना, ग्रामीण जीवन और सभ्यता, विरासत में आमूल-चूल परिवर्तन कर रहे हैं और इससे नये सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य जन्म ले रहे हैं, वहीं प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। इससे ग्रामीण संस्कृति और जीवन की दिशा बदल रही है। 'भारतीय ग्राम' के लेखक प्रख्यात समाजशास्त्री डॉ.श्यामाचरण दुबे ने भारत के गाँवों पर गहन शोध के उपरांत जो निष्कर्ष दिये, वे आज भी प्रासंगिक हैं, किन्तु सोशल मीडिया जैसे संचार माध्यमों के गाँवों पर व्यापक प्रभाव का अध्ययन अभी शेष है। सोशल मीडिया ग्रामीण जीवन को बदलने में सर्वाधिक योगदान दे रहा है। हालांकि इस दिशा में कई शोध हुये हैं और हो रहे हैं, किन्तु ग्रामीण जीवन के परिप्रेक्ष्य में विस्तृत और गहन अध्ययन की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में यह शोध अध्ययन प्रस्तावित है। चूंकि यह बदलाव तकनीक के कारण है तो जहां भी यह तकनीक होगी, उसका प्रभाव वहां दिखाई देगा। यानि यह अध्ययन भारत के संपूर्ण ग्रामीण जीवन के संदर्भ में सत्य हो सकता है क्योंकि सोशल मीडिया की पहुंच सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक सहज हो रही है। साथ ही सोशल मीडिया पूरे देश में समान परिवेश की रचना कर रहा है क्योंकि सभी स्थानों पर सोशल मीडिया के मंच एक समान हैं तो स्वाभाविक है कि पूरे देश में कमोवेश प्रभाव भी समान होगा।

साहित्य समीक्षा

कोई भी शोध कार्य निश्चित प्रक्रियाओं को अपनाए बिना संपन्न नहीं हो सकता। यदि शोध के निष्कर्षों को प्रामाणिक और उपयोगी बनाना है तो वैज्ञानिक विधि से शोध की प्रक्रियाओं का उपयोग करना चाहिए। प्रस्तुत शोध विषय 'सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में,

सन् 2012 से 2022 तक)' को संपन्न करने से पूर्व इस विषय से संबंधित साहित्य एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का गहन अध्ययन किया जाएगा। इसमें संचार माध्यमों का ग्रामीण विकास, युवाओं आदि पर प्रभाव को लेकर कई शोध पत्रों का अध्ययन किया है। पुस्तकों के साथ सोशल मीडिया पर मीडियाशास्त्रियों के आलेखों, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों का भी अध्ययन शामिल है।

शोध-पत्रों का अध्ययन

इसमें कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया के प्रभाव को लेकर कई शोध हुये हैं जिसमें ग्रामीण विकास पर प्रभाव, छात्रों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव, कृषि कार्य में सोशल मीडिय की भूमिका, ग्रामीण भारत पर सोशल मीडिया का प्रभाव, समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव आदि शामिल हैं। इसके साथ रेडियो, टेलीविजन जैसे संचार माध्यमों का समाज अथवा ग्रामीण समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है इसका भी अध्ययन किया जिसमें खेड़ा संचार परियोजना शामिल है।

संचार के अन्य माध्यमों जिसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि का ग्रामीण समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। तमाम शोध-पत्रों के निष्कर्ष इसे साबित करते हैं। चूंकि सोशल मीडिया में इन सभी संचार माध्यमों का समावेश है, अतः ग्रामीण समाज पर इसके प्रभाव अवश्य पड़े हैं।

1 ग्रामीण विकास को बेहतर बनाने के उद्देश्य से सोशल मीडिया और ग्रामीण भारत के मध्य संबंधों को दिखाने के लिये 'ए रिसर्च ऑन द इफैक्ट ऑफ सोशल मीडिया इन द डवलपमेंट ऑफ रूरल सोसायटीः ए रिव्यू'[1] नामक शोध पत्र के निष्कर्ष में कहा गया है कि सोशल मीडिया ने निःसंदेह ग्रामीण लोगों के जीवन को बदल दिया है। कृषि के क्षेत्र में कई अवसर मिले हैं, फसल बेचने की प्रक्रिया आसान हुई है और बिचौलिये हटा दिये गये हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र की बात हो या राजनीतिक रूप से जागृत चेतना की, सभी क्षेत्रों में सोशल मीडिया का योगदान है। सोशल मीडिया सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन से लेकर एकीकृत समाज के निर्माण में मदद कर सकता है।

2 आरजीपीजी महाविद्यालय, मेरठ के समाजशास्त्र की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ.अंजुला राजवंशी ने 'मीडिया एंड रूरल सोसायटीः ए स्टडी'[2] नामक शोध पत्र में मीडिया का प्रभाव ग्रामीण समाज पर दिखाया है। उन्होंने शोध पत्र के निष्कर्ष में लिखा है कि मीडिया ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि गतिविधि को विकसित करने में बहुमूल्य भूमिका निभा सकता है। मीडिया का सकारात्मक और विश्लेषणात्मक ढंग से काम करने का तरीका भारत को एक विकसित देश बनाने में मददगार साबित हो सकता है। भारतीय ग्रामीण समुदाय को विकसित करने के लिये मूल्यवान विचारों का सुझाव देने के लिये अध्ययन की भी आवश्यकता है।

3 'इंपैक्ट ऑफ सोशल मीडिया ऑन रूरल इंडिया'[3] में सोशल मीडिया और ग्रामीण भारत के बीच संबंधों को दिखाते हुये कहा है कि सोशल मीडिया के कारण ग्रामीण विकास को बेहतर बनाया जा सकता है। इस रूप में इसके सकारात्मक विश्लेषण के साथ मीडिया की सीमाओं का संक्षिप्त विश्लेषण भी किया गया है। सोशल मीडिया को व्यापक स्तर पर परिभाषित करते हुये कहा कि चाहे वह किसी भी रूप में हो, मीडिया की दर्शकों तक पहुंचने की सामाजिक जिम्मेदारी है।

4 'इवोल्यूशन एंड अपलिफ्टमेंट ऑफ रूरल इंडिया यूजिंग सोशल मीडिया'[4] नामक शोध पत्र में रेखांकित किया गया है कि कैसे सोशल मीडिया आधारित जीवन ग्रामीण भारत के निर्माण में उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। सोशल मीडिया के विविध मंच संवाद करने, साझा करने, पुनर्प्राप्त करने और व्यापार करने में सक्षम बनाता है। अब प्रांतीय क्षेत्रों में लोग काम, शिक्षा, स्वास्थ्य और धन संबंधी सेवाओं के लिए उन तरीकों से अवसर प्राप्त करने में सक्षम होंगे जो बहुमुखी नवाचार और वेब आधारित जीवन के प्रसार से पहले समझ से बाहर थे।

5 'सोशल मीडिया हैबिट ऑफ रूरल इंडियाः लिटरेचर रिव्यू'[5] भविष्य के शोध ग्रामीण उपयोगकर्ता समूह, उनकी आवश्यकताएं, संभावित स्तर, लागत वहन करने की क्षमता और जानकारी की प्रासंगिकता के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल की पहचान करेंगे। आईसीटी उपयोगकर्ता का आधार, रवैया और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में उनके विश्वास का भी अध्ययन किया जाना है। एक पेस्टल विश्लेषण (राजनीति, आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, विधि और पर्यावरणीय अध्ययन) आधारित शोध करने की आवश्यकता है जो ग्रामीण सोशल मीडिया की आदत

का प्रतिरूप की सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा। यह ग्रामीण भारत को एक समान गति से पूरे भारत के समानांतर चलने में सक्षम बनाएगा। यह खेती, शिक्षा, उद्योग, स्वास्थ्य, व्यापार, बुनियादी ढांचा, राजनीतिक, सांस्कृतिक और समग्र रूप में ग्रामीण भारत का नैतिक उत्थान में मदद करेगा।

6 सोशल मीडिया के सामाजिक प्रभावों को लेकर पूरी दुनिया में शोध हो चुके हैं अथवा हो रहे हैं। इसी क्रम में इथोपिया के शोधार्थी ने प्रकाशित 'द इफैक्ट ऑफ सोशल मीडिया ऑन सोसायटी'[6] नामक आलेख के निष्कर्ष में लिखा है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं। इसमें संदेह नहीं है कि सूचना एक शक्ति है और सूचना तकनीकी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। पूर्व निर्धारित उद्देश्य को लेकर सोशल मीडिया के प्रयोग करने से वांछित लक्ष्य प्राप्त किये जाते हैं जबकि सही तरीके से उपयोग नहीं करने पर यह हमारे जीवन के साथ समाज के सभी लोगों खासकर बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

इस संदर्भ में अनेक शोध पत्र और भी हैं जिसमें 'कृषि कार्य में सोशल मीडिया की भूमिका', 'विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव' आदि शामिल हैं।

7 खेड़ा परियोजना केस स्टडी

'खेड़ा संचार परियोजना'[7] सामाजिक जागरूकता का माध्यम बना था। ग्रामीण जैसे-जैसे टेलीविजन से परिचित होने लगे, लोगों ने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया। इस पर चले स्वास्थ्य, खेती और शैक्षिक कार्यक्रम का प्रभाव सर्वाधिक था। इस परियोजना के तहत जिन गांवों का चयन किया गया, वहां दूसरे गांवों की अपेक्षा लोग अधिक जागरूक थे। उदाहरण के लिये इम्यूनाइजेशन के विषय में एक कार्यक्रम प्रसारित किया गया। इस शो को देखने वाले 96 प्रतिशत ग्रामीणों को, इम्यूनाइजेशन के फायदों के बारे में पता था। जबकि, नहीं देखने वाले सिर्फ 24 प्रतिशत लोगों को इस विषय में जानकारी थी। मशहूर साइंस फिक्शन लेखक आर्थर क्लार्क ने इसे विश्व इतिहास का सबसे बड़ा संचार प्रयोग बताया था।

पुस्तकों का अध्ययन

प्रस्तावित शोध विषय में भारतीय ग्राम की अवधारणा को समझना आवश्यक था। भारतीय ग्रामों की प्रकृति को समझने के लिए प्रख्यात समाजशास्त्री प्रोफेसर श्यामाचरण दुबे की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतीय ग्राम'[8] का बारीकी से अध्ययन किया। इसके साथ जी.एस. भार्गव की पुस्तक 'भारत में प्रेस एक सिंहावलोकन'[9] का भी अध्ययन किया। जगदीश्वर चतुर्वेदी की पुस्तक 'सूचना समाज'[10] के साथ शालिनी जोशी व शिव प्रसाद जोशी की पेंग्विन इंडिया से प्रकाशित पुस्तक 'न्या मीडिया अध्ययन और अभ्यास'[11] में प्रकाशित आलेख 'नया मीडियाःनुकसान और निहितार्थ' का अध्ययन किया।

डिजिटल और मुद्रित आलेखों का अध्ययन

सोशल मीडिया को समझने के लिए सबसे पहले इस पर हुये कार्यों का अध्ययन आवश्यक था। इसके लिये इस विषय से जुड़े कई आलेखों का अध्ययन किया। इस क्रम में डॉ.अनिल सौमित्र की 'विकास की अवधारणा और सोशल मीडिया',[12] न्यू मीडिया और इंटरनेट विषय को समझने के लिए डॉ.मुकुल श्रीवास्तव के आलेखों का भी अध्ययन किया।

विस्तृत साहित्य समीक्षा के उपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि संबंधित शोध विषय पर सोशल मीडिया को लेकर ग्रामीण जीवन के परिप्रेक्ष्य में विस्तृत और गहन अध्ययन नहीं हुआ है। अतः ग्रामीण जीवन पर सोशल मीडिया का व्यापक प्रभाव ज्ञात करने के लिए यह शोध विषय अपेक्षित एवं समीचीन है।

उद्देश्य

प्रख्यात संचारशास्त्री विल्बर श्रैम जैसे विद्वान जनमाध्यमों को बदलाव का प्रभावी एजेंटे मानते हैं। जनमाध्यम समाज में बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाते हैं। श्रैम यह भी मानते हैं कि कई मामलों में जनमाध्यम नये सामाजिक संबंधों को भी जन्म देने में भूमिका निभाते हैं। विकास संचार के विशेषज्ञ भी मानते हैं कि किसी भी देश

के विकास में मीडिया की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण है। हालांकि ऐसा करते समय कई बार सामाजिक ढांचे और संस्थाओं की स्थिति को नजरअंदाज कर दिया जाता है एवं हाशिये पर पड़े वर्ग की आर्थिक स्थिति से जुड़े प्रश्नों पर खामोशी बरती जाती है।

उक्त संदर्भों को ग्रहण करते हुए मेरे शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन के विविध पहलुओं पर प्रभाव ज्ञात करना।
- सोशल मीडिया के कारण ग्रामीण जीवन में हो रहे बदलाव का आकलन करना।
- सोशल मीडिया के कारण ग्रामीण जीवन और सामाजिक ताने-बाने में हो रहे सकारात्मक तथा नकारात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

सोशल मीडिया ने ग्रामीण सामाजिक संरचना के साथ मूल्यों में व्यापक बदलाव किए हैं। इसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं-

- सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।
- सोशल मीडिया ने ग्रामीण जीवन को सहज बनाया है।
- सोशल मीडिया ने ग्रामीण जीवन में सामाजिक संबंधों को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है।

शोध का अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध विषय 'सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में, सन् 2012 से 2022 तक)' के अध्ययन के लिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बागपत, मेरठ और मुजफ्फरनगर के दो-दो ग्रामों का चयन किया जाएगा। इसमें एक गाँव शहर से दूर और सभी चीजों में पिछड़ा हुआ होगा तो दूसरा गाँव अपेक्षाकृत विकसित होगा। उदाहरण के लिये मेरठ के हस्तिनापुर क्षेत्र में खादर के गाँव आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक रूप से पिछड़े हुये हैं तो मेरठ शहर के समीप के गाँव पर शहरी जीवन का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। चूंकि मेरठ जिला इन सभी के केंद्र में है, अतः इसके दोनों गाँवों का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। मेरे शोध का अध्ययन वर्ष 2012 से लेकर 2022 तक ग्रामीण जीवन में सोशल मीडिया के कारण हुये परिवर्तनों को ज्ञात करना है। कुल 10 वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में सोशल मीडिया का कैसे विकास हुआ? इसने 10 वर्षों में कितना प्रभाव छोड़ा? ग्रामीण जीवन, परंपराओं, रीति-रिवाजों और समग्र रूप में ग्रामीण समाज को कैसे प्रभावित किया, इसका अध्ययन किया जाएगा।

सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमिः

अध्ययन के लिए चयनित ग्रामों की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां के निवासी प्रमुख रूप से कृषि कार्यों से जुड़े हैं और आधुनिक जीवन शैली अंगीकार करने के बाद भी ग्राम्य जीवन, संस्कृति और पारंपरिक ग्राम्य चरित्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। हालांकि परंपरागत रूप से जिस ग्राम्य जीवन की छवि उभरती है, वह यहां कई बार कम मिलती है और शहरी जीवन शैली अधिक प्रतिबिंबित होती है। यहां के कंकरीट के विशाल भवनों को देखकर लगता नहीं कि हम गाँव में हैं, लेकिन ट्रैक्टर, कृषि उपकरण, भैंसा बुग्गी, कृषि कार्य, पशुपालन, उपले के ढेर, आदि अनेक दृश्य हैं जिससे ठेठ ग्रामीण जीवन के बिंब उभरते हैं। कतिपय ग्राम आर्थिक रूप से काफी संपन्न हैं और व्यवसायिक कृषि पर जोर देते हैं। इससे उनका जीवन स्तर काफी ऊंचा है। घरों में ए.सी., कूलर, फ्रिज व आधुनिक उपकरण सहजता से मिल जाते हैं। वहीं शहरी जीवन और कस्बों से दूर गाँव सामाजिक और आर्थिक रूप से काफी पिछड़े हैं और वहां आज भी परंपरागत गाँव की सभी छवियाँ दिखाई देती है। इसमें संदेह नहीं कि दोनों स्थानों पर सोशल मीडिया के उपयोग और प्रभावों की अवस्थाएँ भिन्न होंगी। समग्र रूप में मेरठ के तीनों तहसील मेरठ, मवाना और सरधना के अलावा बागपत और मुजफ्फरनगर जिले के दो-दो गाँव का चयन अध्ययन क्षेत्र के रूप में किया जाएगा। अध्ययन के लिए जिसमें अनुसूची के आधार पर सर्वेक्षण, ग्राम के प्रबुद्धजनों का व्यक्तिगत साक्षात्कार, व्यक्तिगत रूप से ग्रामों का भ्रमण कर अवलोकन, अवधारणाओं के पक्ष में प्रमाणों का एकत्रिकरण आदि कार्य संपन्न किया जाएगा।

शोध प्रविधि

यदि शोध का उद्देश्य किसी कार्य का जनक है तो पद्धति उस कार्य को संपादित करने वाली शक्ति है। प्रस्तुत विषय के शोध निष्कर्षों को प्राप्त करने के लिए प्रमुख रूप से निम्न शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा-

- **गुणात्मक विधि-** इस विधि के द्वारा सामाजिक घटनाओं से संबंधित तथ्यों का गुणों के आधार पर वर्णन किया जाएगा। साक्षात्कार के आधार पर प्रस्तुत विषय में गुणात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा।
- **मात्रात्मक विधि-** अनुसूची के माध्यम से प्रस्तुत शोध विषय में 400 लोगों का साक्षात्कार लिया जाएगा, जिसमें पुरूषों, महिलाओं, युवाओं, बुजुर्गों, शिक्षित, अशिक्षित आदि शामिल होंगे। इसमें बहुसंख्यक जनों की राय में विषय की प्रवृति किस तरफ जा रही है, इसका आकलन किया जाएगा।
- **सर्वेक्षण पद्धति-** प्रस्तुत शोध कार्य में सबसे अधिक इस पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। अनुसूची के माध्यम से सर्वेक्षण कर समाज के विभिन्न वर्गों (आयु, लिंग, आर्थिक, शिक्षा) के विचारों को संग्रह किया जाएगा।
- **अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति-** प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण पद्धति से प्राप्त निष्कर्षों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया जाएगा। (समाज के किस आयु वर्ग की संबंधित विषय पर क्या राय है, आर्थिक आधार पर वर्गीकृत समाज के लोगों की क्या राय है आदि।) इस पद्धति के तहत ग्रामीण क्षेत्र में सोशल मीडिया के प्रभावों की विवेचना की जाएगी। आज प्रयोग में हो रहे मनोरंजन के साधनों की पहले के मनोरंजन के साधनों से तुलना की जाएगी। सोशल मीडिया को समाज किस रूप में ग्रहण कर रहा है आदि का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा।

आंकड़ा संग्रह एवं विश्लेषण

प्राथमिक आंकड़े अनुसूची के आधार पर संग्रहित किये जाएंगे। साथ ही प्रश्नावली विधि से भी आंकड़े जुटाएंगे। इसके लिये एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की जाएगी जिसमें लगभग 20 प्रश्न होंगे। पत्र-पत्रिकाओं, इंटरनेट आदि से द्वितीयक आंकड़े लिये जाएंगे। साथ ही प्राथमिक आंकड़ों की पुष्टि एवं अन्तर्संबंधों के विश्लेषण में इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा। अनुसूची एवं प्रश्नावली विधि से प्राप्त प्राथमिक आकड़ों, समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों, लेखों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण कर संकल्पनाओं की पुष्टि की जाएगी। इसमें सह-संबंध एवं विचलन ज्ञात करने के लिये मापनी एवं अन्य वैज्ञानिक शोध विधियों का उपयोग किया जाएगा। उपरोक्त समस्त आंकड़ों को उचित आरेखों से प्रदर्शित किया जाएगा। अन्त में समस्त निष्कर्षों के विश्लेषण के साथ शोध की सीमाओं एवं सुझावों का वर्णन किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्याय

'सोशल मीडिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन'
(पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में, सन् 2012 से 2022 तक)

अध्याय 1 - प्रस्तावना
अध्याय 2 - सोशल मीडिया- इतिहास, विकास, विविध मंच
अध्याय 3 - परंपरागत गाँव और ग्रामीण जीवन
अध्याय 4 - संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन
अध्याय 5 - शोध प्रविधि
(क) शोध का उद्देश्य
(ख) शोध की परिकल्पना
(ग) शोध का अध्ययन क्षेत्र
(घ) शोध प्रविधि एंव चरण
अध्याय 6 - सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं का अभिमत
अध्याय 7 - प्रतिदर्श से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं ग्राफिक प्रदर्शन
अध्याय 8 - निष्कर्ष एंव सुझाव

परिशिष्ट 1 - संदर्भ ग्रंथ
परिशिष्ट 2 - प्रश्नावली

नोटः-शोध प्रबंध लेखन के दौरान अध्यायों में परिवर्तन संभव है।

संदर्भ ग्रंथः

1 Rampal. "A Research on the Effect of Social Media in the Development of Rural Society: A Review." Ignited Minds Journals (March 2019): 1066-1071. (Link http://ignited.in/I/a/200753)

2 Rajvanshi, Dr.Anjula. "Media and Rural Society A study." Research Gate.net (August 2019).
(Link https://www.researchgate.net/publication/335201845_Media_and_Rural_Society_A_Study)

3 Bansal, Ekta. "Impact of Social Media on Rural India." Semanticscholar.org (2015). (Link https://www.semanticscholar.org/paper/IMPACT-OF-SOCIAL-MEDIA-ON-RURAL-INDIA- Bansal/b15f62ede1f87f2511bd7f1d8daa092cb6bbf1b8)
4 Shivani Rakheja, N.Saxena and S.Rawat. "Evolution and Upliftment of Rural India Using Social Media." Semanticscholor.org (December 2018). (Link https://www.semanticscholar.org/paper/Evolution-and-Upliftment-of-Rural-India-Using-Media-Rakheja-Saxena/4cec38330c59cce5590fb3e4b7be9536fb9f4416)
5 Kumar, Madhurendra. "Social Media habit of Rural India." International Journal of Science and Research (April 2019). (Link https://www.ijsr.net/archive/v8i4/ART20197361.pdf)
6 Damota, Mulugeta Deribe. "The Effect of Social Media on Society." Research gate.net (January 2019). (Link https://www.researchgate.net/publication/342145135_The_Effect_of_Social_Media_on_Society)
7 ‘खेड़ा संचार परियोजना’।
8 डॉ.श्यामाचरण दुबे: ‘भारतीय ग्राम’। हिन्दी अनुवाद योगेश अटल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9 जी.एस. भार्गव: भारत में प्रेस एक सिंहावलोकन।
10 जगदीश्वर चतुर्वेदी: सूचना समाज।
11 शालिनी जोशी व शिव प्रसाद जोशी: नया मीडिया अध्ययन और अभ्यास।
12 डॉ.अनिल सौमित्र के आलेखः विकास की अवधारणा और सोशल मीडिया।